रात्रि क्लासः– 27/9/68 :– मीठे2 रूहानी बच्चे यहाँ पढ़ने आते हैं। किसके पास? बेहद के बाप के पास। क्या बनने लिए? नर से ना0 वा नारी से लक्ष्मी बनने लिए। यह भी समझते होंगे हम आत्मा इस शरीर को छोड़ जाये जरूर प्रिन्स बनेगी; क्योंकि यह बच्चे अच्छी तरह से जानते हैं। यह दादा भी प्रिन्स बनेगा। यह भी भाई। तुम हो बहन। तो समझेंगे हम आत्माएँ एक बाप के बच्चे हैं। हम यह शरीर छोड़ जाकर विश्व का मालिक बनेंगे। जबकि हमारा बड़ा भाई यह दादा जाकर शाहज़ादा बनेंगे तो हम भी बनेंगे। कम बनने का तो ख्याल नहीं करते हैं। तुम यहाँ आये ही हो नर से ना0 बनने की नॉलेज लेने। तो बच्चों को जरूर नशा चढ़ा हुआ होगा। तुम यह भी जानते हो जितना बाप को याद करते हैं। बाबा ने समझाया है योग अक्षर निकाल दो। वह हठयोगी है ना। उनको यह पता नहीं है तुम राजयोगी हो। वह है हठयोगी। वह तुमको नहीं जानते हैं। तुम्हारी एमआबजेक्ट है यह। तुम जानते हो राजयोग से यह पद पाया है। 5000 वर्ष पहले इन्होंने आगे जन्म में अर्थात् पुरुषोत्तम संगमयुग पर बाप की याद से सतोप्रधान बन राज–भाग पाये हैं। तुम कहते भी हो हम राजयोग सीखने आते हैं। तो जरूर खुशी होनी चाहिए। तुम बच्चे जानते हो बाप से वरसा मिलता है। दूसरे जन्म में हम नई दुनिया में होंगे। जैसे इस समय नर्क के मालिक हैं वहाँ स्वर्ग के मालिक होंगे। यह भी देखना है हम बाप को याद करते हैं। कहते हैं बाबा आप की याद कायम नहीं रहती। बाप को बच्चा कहे जिस बाप से विश्व की बादशाही मिलती है उस बाप को कहना बाबा आपको भूल जाते हैं तो बाप कहेंगे तुम महाराजकुमार भी नहीं बन सकते हो। बाप को याद करने लिए बाप के समाने नहीं बैठना पड़ता है। वह भी बेकायदे हैं। बच्चा काम काज करेगा स्नान करेगा बाप को भूल जावेगा क्या; परन्तु बाप समझाते हैं युद्ध का मैदान है माया भूलाने वाली है। उस पर ही जीत पानी है। तुम महावीर हो ना। बच्चे दिलवाला मंदिर में गये थे ना। वहाँ दिल लेने वाला कौन था। ब्रह्मा नहीं कहेंगे। ऊँच ते ऊँच बाप है वही दिल लेते हैं। इसमें बच्चे मुँझते क्यों हैं। सारा दिन बिज़ी रहते हैं। बाप तो कहते हैं धंधा आदि भी करो। पढ़ाई तो सहज है। 84 का चक्र समझाया जाता है। वह फिरता ही रहता है। याद भी सहज है। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप कहते हैं भूलते क्यों हो। बाप को भूलते हो तो अपन को आत्मा भी भूलते हो। फुर्सत बहुत (अधूरी मुरली)